नई कहानी आंदोलन की उपलब्धियों के संदर्भ में मुक्तिबोध की कहानियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा की पी–एच0डी0 (हिन्दी)
की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
2015

निर्देशक — शोधार्थी

(डॉ0 प्रेमशंकर सिंह) — (अरविंद तिवारी)

असिस्टेण्ट प्रोफेसर

विभागाध्यक्ष — प्रमुख, कलासंकाय

(प्रो0 शर्मिला सक्सेना) — (प्रो0 रागिनी रॉय)

हिन्दी विभाग

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा–282005

नई कहानी आंदोलन की उपलब्धियों के संदर्भ में मुक्तिबोध की कहानियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन

प्रस्तावना: नयी कहानी हिन्दी कहानी के विकास क्रम में मील का पत्थर मानी जाती है ।1950 ईसवी से 1960 ईसवी तक के बीच लिखी गयी कहानियों को नयी कहानी के अंतर्गत माना जाता है ।ये कहानियाँ बिल्कुल नए तर्ज़ और मिज़ाज की कहानियाँ थी ।1947 ईसवी में देश आजाद होता है। लगभग 200 वर्षों के बाद आज़ादी मिलना अपने आप में एक बड़ी बात थी। किन्तु देश की आज़ादी के साथ ही देश का विभाजन भी जुड़ा हुआ है। लाखों की संख्या में लोग विस्थापित होते हैं, हत्याएं होती हैं। सांप्रदायिकता की आग में पूरा देश खून से लथपथ हो जाता है। पिछला सब कुछ भस्म हो जाता है। देश की आज़ादी को लेकर आम जनता के मन में जो स्वप्न थे, वे चटकते दिखाई देते हैं। आम जनता का, लेखक का सत्ता से मोहभंग होता है। लेखक को हर सिद्धान्त, दर्शन गलत दिखाई देने लगते हैं। लेखक सोचता है कि उसकी प्रतिबद्धता केवल समाज के प्रति होनी चाहिए। अतीत का गुणगान या भविष्य को रामराज्य बनाने की बात करना बेकार है। संभवतःइसीलिए इस युग में ऐतिहासिक कहानियाँ नहीं लिखी गयीं। लेखक सिर्फ वर्तमान का वाचक बन गया। भोगा हुआ यथार्थ ही उसकी रचना की अंतर्वस्तु बन गयी। बगैर किसी दर्शन या विचारों का चश्मालगाए हुए तत्कालीन समाज और उसकी व्यवस्था को ज्यों का त्यों पाठक के सामने रखा गया।

औद्योगीकरण के तीव्र विकास के कारण लोगों का गांवों से शहरों में पलायन होता है ।यहाँ उनके अपने परिवार बनते हैं, जिसमे सिर्फ पति –पत्नी और बच्चे ही आते हैं। माँ-बाप, भाई –बहन से सबंध टूटता हुआ दिखाई देता है। शहर में आकर नारी भी शिक्षित होती है। घर से निकल कर वह भी नौकरी करने लगती है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने लगती हैं। अपने

आत्मसम्मान के प्रति सचेत होती है। अपने ऊपर होने वाले अन्याय का खुल कर विरोध करती है। पुरुष का अहं जाग्रत होता है, परिणामतः संबंध टूटते हुए नजर आने लगते हैं।

नयी कहानी का नयापन उसकी विद्रोह चेतना में छुपा हुआ है।नयी कहानी समकालीन मान्यताओं, मूल्यों, रूढ़ियो सभी का खंडन करती है। नई कहानी आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षरो में निर्मल वर्मा, मोहन राकेश, भीष्म साहनी, अमरकान्त,राजेंद्र यादव, उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी आदि प्रमुख हैं।

इसी समय में मुक्तिबोध भी सजग रूप से साहित्य सृजन कर रहे होते हैं। उनकी कविताओं में हमें आम आदमी की जिस बेचैनी, तड़प, छटपटाहट, के दर्शन मिलते हैं, उन्हीं समस्याओं को वे जनवादी दृष्टिकोण से अपनी कहानियों में रखते हैं। मुक्तिबोध अपने समय में सर्वाधिक बेचैन रहने वाले और पाठक को बेचैन करने वाले साहित्यकार हैं। दुर्भाग्यवश उनके कथा साहित्य पर आलोचकों का ध्यान कम गया। राजेन्द्र यादव- "एक दुनिया समानान्तर" की भूमिका में अज्ञेय को खासकर लक्षित करते हुए कहते हैं- क्या कारण है कि हमेशा कवि ही कथा रचना कि और अग्रसर होता है, कभी कहानीकार काव्य रचना की और नहीं जाता। " अंधेरे में"नामक अपनी प्रसिद्ध कविता में मुक्तिबोध कहते हैं –"कविता में कहने की आदत नहीं/पर कह दूँ /वर्तमान समाज चल नहीं सकता / पूंजी से जुड़ा हृदय बदल नहीं सकता। कविता की अपनी एक सीमा होती है। कहानी कहन शब्द से बनी है जिसका अर्थ ही होता है –सुनाना।कहानी अपने लिए नहीं दूसरों के लिए लिखी जाती है।"

यहाँ एक बात महत्वपूर्ण हो जाती है कि क्या मुक्तिबोध के कथासाहित्य पर विचार किया जाना चाहिए? मुक्तिबोध नई कहानी के दौर में लिख रहे थे। हालांकि वे 1936 ईसवी से ही कहानी लिखना शुरू कर देते हैं। नई कहानी आंदोलन जिन प्रश्नों को पाठक के सामने उठाकर रखती है वे हैं –बदलते स्त्री–पुरुष संबंध, मध्य वर्ग की कुंठा, अवसाद,

अकेलापन,अजनबीयत,प्रेम मुख्य हैं । नई कहानी इन बिन्दुओं पर विचार तो करती है लेकिन कोई समाधान नहीं दिखाती । स्त्री –पुरुष के संबंध टूटते हैं जिसका मुख्य कारण अहं का टकराव है । ये आज की मेट्रो सिटी की मुख्य समस्या है । मुक्तिबोध की कहानियों में भी हमें यह अलगाव दिखाई देता है किन्तु यह भीतरी अलगाव है जिसका कारण पति का पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा न कर पाना है । इस अलगाव के भीतर आलोचना है, आलोचना के पीछे विरोध है, विरोध के भीतर करुणा है । "जितना तुम्हारा सच है उतना ही कहो" तक ही वे सीमित नहीं रहते बल्कि"अभिव्यक्ति के खतरे उठाने ही होंगे" के रूप में अपनी बात रखते हैं ।स्वान्तः सुखाय का चित्रण न करते हुए वे समाज में फैली हुई विसंगतियों को हमारे सामने लाते हैं । 'पक्षी और दीमक' कहानी में पक्षी और दीमक के रूपक के माध्यम से मध्यवर्ग की धनलोलुपता और उसके लालचीपन को पूरी तटस्थता के साथ लेखक ने दिखाया है । इस कहानी में बाजारवाद और उसके बढ़ते प्रभाव से समाज को सचेत करने का प्रयास किया गिया है । आज़ बाजार अपना रूप और भी खतरनाक ढंग अख़्तियार कर चुका है । यह कहानी 1960 में लिखी गयी थी, इससे पता चलता है कि लेखक अपने आने वाले समय को लेकर कितना सजग था ।

'ज़िंदगी कि कतरन' कहानी में आम आदमी कि असहायता को दिखाया गया है कि क्यों आम आदमी लाचारीवश आत्महत्या करने को मजबूर हो जाता है । लेखक ने समाज में व्याप्त वर्ग भेद पर भी चुटकी ली है-"वो कहता गया, इस तालाब में जान देने वे आए हैं जिन्हें एक श्रेणी में रखा जा सकता है । ज़िंदगी से उकताए और घबराए लोग थे वे । प्रेमी युगल यहाँ मरने नहीं आते हैं,..........उनको मरने के लिए भी रोमैंटिक जगह चाहिए।" सरकारी कार्यालयों में व्याप्त आपसी गुटबाजी, भ्रष्टाचार को भी मुक्तिबोध जी ने दिखाया है जिसे आज़ हम किसी भी विभाग में देख सकते हैं ।

नई कहानी समाज में व्याप्त 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' का ही वर्णन करके चुप हो जाती है, शोषण के विरुद्ध बोलने में दिलचस्पी नहीं लेती। शायद इसीलिए 'क्लॉड ईथरली' का पात्र लेखक से कहता है –"जो आदमी आत्मा कि आवाज कभी कभी सुन लिया करता है और उसे बयान करके उससे छुट्टी पा लेता है वह लेखक बन जाता है। आत्मा की आवाज जो लगातार सुनता है और करता कुछ नहीं है, वह भोला भाला, सीधा सादा बेवकूफ है। जो उसकी आवाज बहुत ज्यादा सुना करता है और वैसा ही करने लगता है वह समाज विरोधी तत्वों में शामिल हो जाता है। लेकिन जो आदमी आत्मा की आवाज जरूरत से ज्यादा सुनकर हमेशा बेचैन रहता है और उस बेचैनी में भीतर के हुक्म का पालन करता है, वह निहायत बेवकूफ है।"

शोध की संभावना और महत्व– नई कहानी आंदोलन हिन्दी कहानी को एक नई दिशा देती है। नई कहानी को प्रतिष्ठित करने में मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, अमरकांत, उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी आदि मुख्य हैं। नई कहानी की दो धारायें हैं , एक धारा में राजेंद्र यादव , कमलेश्वर , निर्मल वर्मा आते हैं जो मुख्य रूप से महानगरीय जीवनबोध को हमारे सामने रखते हैं तथा दूसरी धारा में अमरकांत , भीष्म साहनी आते हैं जो व्यक्तिगत संबंधों से परे हटकर मध्यवर्गीय समाज को चित्रित करते हैं , किन्तु इसी बीच में मुक्तिबोध भी कथा सृजन कर रहे होते हैं , जो जनवादी तरीके से मध्यवर्गीय समाज के खोखलेपन को उजागर करते हैं। अपनी कविता की ही भांति व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष के साथ –साथ बाहरी संघर्ष को भी तटस्थ भाव से दिखाना उनकी कहानियों की मुख्य विशेषता है। दुर्भाग्यवश नई कहानी के आलोक के कारण उनके कथा साहित्य पर आलोचनात्मक शोध कार्य नहीं किया गया है। नई कहानी आंदोलन के प्रतिमानों को परखते हुए मुक्तिबोध के कथा साहित्य की आलोचनात्मक विवेचना

मेरे शोध कार्य का अभीष्ट है। अपने शोध कार्य के अंतर्गत मैं समीक्षात्मक तथा विश्लेषणात्मक प्रविधियों का प्रयोग करूंगा।

शोधार्थी

अरविंद तिवारी

नई कहानी आंदोलन की उपलब्धियाँ और मुक्तिबोध की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

भूमिका

1. **नई कहानी आंदोलन की पृष्ठिभूमि**
    - नई कहानी आंदोलन की सैद्धांतिकी: परिधि और हाशिया
    - जीवनबोध और रचनादृष्टि
    - कथा समीक्षा के नए प्रतिमान
    - नई कहानी आंदोलन: उपलबद्धि और सीमाएं
2. **नई कहानी आंदोलन का हाशिया**
    - प्रमुख रचनाकार और रचनादृष्टि
    - मुक्तिबोध की केन्द्रीयता का प्रश्न और हिन्दी कहानी
    - मध्यवर्गीय सीमायें, नई कहानी और रचना दृष्टि
3. **मुक्तिबोध की कहानियाँ: अँधेरे में दरार**
    - मानववाद की स्थापना
    - वंचित तबके के प्रति संवेदनात्मक दृष्टि
    - पारिवारिक मूल्यों के प्रति संरक्षण की चिंता
4. **मुक्तिबोध की कहानियों का शिल्प विधान**
    - कहानी के नए शिल्प की तलाश
    - मुक्तिबोध की कथा भाषा
    - कथा के नए प्रयोग
5. **कथाकार मुक्तिबोध का समकालीन महत्व**
    - वैचारिकी: समकालीनकहानियाँ और मुक्तिबोध
    - भूमंडलीकरण का दौर और मुक्तिबोध
    - शिल्पगत समानता

उपसंहार

-परिशिष्ट

- आधारग्रन्थ
- सन्दर्भग्रन्थ

आधार ग्रंथ

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1	मुक्तिबोध रचनावली	नेमिचन्द जैन	राजकमल प्रकाशन	1980
2	काठ का सपना	मुक्तिबोध	राजकमल प्रकाशन	1981
3	सतह से उठता हुआ आदमी	मुक्तिबोध	राजकमल प्रकाशन	2005
4	विपात्र	मुक्तिबोध	ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	2001

संदर्भ ग्रंथ

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1	हिन्दी कहानी का विकास	मधुरेश	लोकभारती प्रकाशन	1996
2	कहानी नई कहानी	नामवर सिंह	लोकभारती प्रकाशन	1964
3	हिन्दी आलोचना का दूसरा पाठ	निर्मला जैन	राजकमल प्रकाशन	2012
4	वाद विवाद सिद्धांत	नामवर सिंह	राजकमल प्रकाशन	1989
5	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी	लोकभारती प्रकाशन	2001
6	मुक्तिबोध के बिम्ब और प्रतीक	चंचल चौहान	वाणी प्रकाशन	1997
7	मुक्तिबोध :ज्ञान और संवेदना	नंदकिशोर नवल	राजकमल प्रकाशन	2004
8	आलोचना की सामाजिकता	मैनेजर पाण्डेय	वाणी प्रकाशन	2008
9	मुक्तिबोध : स्वप्न और संघर्ष	कृष्ण मोहन	अनामिका प्रकाशन	2005
10	हिन्दी आलोचना	विश्वनाथ त्रिपाठी	राजकमल प्रकाशन	1982
11	समीक्षा की समस्याएँ	गजानन माधव मुक्तिबोध	राजकमल प्रकाशन	1981
12	हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली	डॉ अमरनाथ	राजकमल प्रकाशन	2009
13	कहानी के नए प्रतिमान	कुमार कृष्ण	वाणी प्रकाशन	2005

14	प्रगति और परंपरा	रामविलास शर्मा	किताब महल	1948
15	हिन्दी कहानी का इतिहास	गोपाल राय	राजकमल प्रकाशन	भाग 1-2008 भाह 2-2012